भूमिका

* भूमिका *

मोहन राकेश आधुनिक हिन्दी साहित्य में बहुचर्चित लेखक रहे हैं। इन्होने अपने जीवन में लेखन को ज्यादह महत्व दिया। इसी जिज्ञासा के कारणवश उन्होने हिन्दी साहित्य को अनमोल रचनाएँ प्रदान की। मोहन राकेश एक सजग कलाकार थे। वे अपने लेखन के प्रति ईमानदार रहे हैं।

मोहन राकेशजी का साहित्य बी.ए. में पढ़ने को मिला। उनका " आधे - अधूरे " नाटक पढ़ते समय ऐसा लगा कि मध्यवर्गीय परिवार महानगरों में कैसा जीवन यापन कर रहा हैं। महानगरीय जीवन का यथार्थ चित्रण राकेशजी ने " आधे - अधूरे " नाटक में किया हैं। इसी नाटक का अध्ययन करने के पश्चात मेरे मन में उत्सुकता जाग उठी कि राकेशजीने नाटकों के साथ - साथ कहानियों में भी महानगरीय जीवन का चित्र जरूर खिंचा होगा। इसे जानने के लिए मैने उनकी कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन पर शोधकार्य करने के लिए उत्साहित हुआ।

मैंने प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध को कुल मिलाकर ४ अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में मोहन राकेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षिप्त में विचार किया गया है। उन्होंने अपने साहित्य में भोगी हुई जिन्दगी का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। जो कुछ अपने जीवन में इन्होंने भोगा उसे अपने समग्र साहित्य में उतारा है। राकेशजी अपना जीवन अनेक संकटों के साथ भोगा पर अंत तक इन संकटों से हारे नहीं। निरंतर आगे बढ़ते रहे। अंत तक जीवन को सही माइने में जीकर अमर हो गये।

द्वितीय अध्याय में महानगरीय जीवन के स्वरूप पर विचार किया गया है। आधुनिक युग में औद्योगिकरण और यांत्रिकीकरण के कारण नगरों ने महानगरों का विशाल स्वरूप धारण कर लिया। महानगर जो सुंदर माना जाता था। लेकिन बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकरण और यांत्रिकीकरण के कारण बेडौल हो गया।

तृतीय अध्याय में राकेशजी की महानगरीय जीवन से सम्बन्धित कहानियों का अध्ययन किया गया है। इनमें से प्रमुखतया महानगरीय जीवन का सामाजिक पक्ष, आर्थिक पक्ष, और पारिवारिक पक्ष आदि से सम्बन्धित कहानियों को लिया गया है, जो महानगरीय जीवन का यथार्थ चित्र हमारे सम्मुख प्रस्तुत हो जाता है।

चतुर्थ अध्याय में मोहन राकेशजी की सभी कहानियोंकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

प्रबन्ध के अंत में उपसंहार है, जो लघु-शोध प्रबन्ध का निचोड है। साथही संदर्भ ग्रंथ सूची में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का समारोह किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति करने में मेरी प्रत्यक्ष

अप्रत्यक्ष सहायता करने वाले तथा प्रोत्साहित करने वाले हित चिंतकों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा प्रथम कर्तव्य है।

डॉ. के. पी. शहा जी जो मेरे श्रध्देय गुरुवर्य रहे हैं उनका ऋण मुझपर जो है वह मेरे जीवन में कभी न उतर पायेगा। उन्हीं के आशीर्वाद एवं कृपा पूर्ण सक्षम निर्देशन में प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध लिखा गया है। आपने सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी अत्यंत सहायता की है। आपने अपना कीमती समय निकालकर मेरी हर समय सहायता की है। जब-जब मुझे प्रबन्ध लेखन में कठिनायी महसूस हुई आपने अपने कुशल निर्देशन से मेरी कठिन राह को सुकर किया है। इस कार्य के दौरान आपसे मुझे जो स्नेह, प्रेरणा और आत्मीयता मिली वह आजीवन भुलायी नहीं जा सकती। आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद का मैं आपका सदैव अभिलाषी रहूँगा।

आदरणीय गुरुवर्य डॉ. पी. एस. पाटील, डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. शंकर मुदगल, जी का आशीर्वाद मेरे साथ रहा उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

पिताजी का श्रम और मेरी लगन, साथही दादी माँ और माताजी के आशिर्वाद से ही मैं यह कार्य पूरा कर सका हूँ यह मेरी धारणा है। उन तमाम मित्रों के प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरी सहायता की। इनमें प्रमुखत: याकूब जमादार, नाजीम शेख, जगन्नाथ तांदळे, हाकीर मुलाणी साथही मेरे आदरणीय मित्र महादेवराव शिंदे जो मेरे गुरु भी हैं इन्होंने मुझे सदैव प्रोत्साहन दिया उनका भी मैं आभारी हूँ।

अंत में इस शोध-प्रबन्ध को अतिशीघ्र एवं सुचारु रूप से टंकलिखित रूप देने का कार्य श्री. बी. बी. गुरव सर [आटपाडी] ने किया इनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ।

कोल्हापुर

दि. :- १२ / ०६/१९९६.

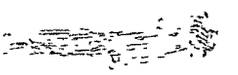

Bharat

[illegible]

शोधछात्र

* अनुक्रमणिका *

प्रथम अध्याय :- "मोहन राकेश व्यक्तित्व एवं कृतित्व" 9 से 30

१.१ जीवन परिचय।
जन्म एवं बाल्यावस्था/माता/पिता/भाई बहन/शिक्षा और अस्थिर नौकरियाँ/व्याकुलता/लेखन की जिज्ञासा/मित्र परिवार/वैवाहिक जीवन/स्वभाव/अंतिम समय।

१.२ कृतित्व.
कहानी साहित्य/उपन्यास साहित्य/निबन्ध साहित्य/नाटक और एकांकी साहित्य/अन्य गद्य कृतियाँ / निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय:- 39 से 47

२.१ "महानगरीय जीवन का स्वरूप।"
महानगरीय जीवन का सांस्कृतिक राजनितिक आर्थिक/धार्मिक/भौगोलिक/पारिवारिक/सामाजिक पक्ष / निष्कर्ष।

तृतीय अध्याय:- "मोहन राकेश की कहानियों मे चित्रित महा- 48 से 87
नगरीय जीवन।"

३.१ "मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन।"

३.१.१ अ] महानगरीय जीवन का सामाजिक पक्ष/अकेलापन/औपचारिकता/निर्वैयक्तिकता/यांत्रिकता/गतिशीलता/प्रतिस्पर्द्धिता/

३.१.२ ब] महानगरीय जीवन का आर्थिक पक्ष।

३.१.३ क] महानगरीय जीवन का पारिवारिक पक्ष/

पारिवारिक व्यक्तिवाद/स्वार्थ/भोगवाद/
अलगाव, निर्वैयक्तिकता।

चतुर्थ अध्याय :- ८८ to १२४

४:१ मोहन राकेश की कहानियों की विशेषताएँ।
शीर्षक/कथानक/चरित्र/संवाद/वातावरण/
भाषा शैली/उद्देश्य/निष्कर्ष

उपसंहार। १२५ to १३३

संदर्भ ग्रंथ सूची। १३४ to १३६